UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 1 January, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

▸	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, डॉ0 अमर बहादुर एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	93-96
▸	विद्यालयी बच्चों पर प्राणायाम का सकारात्मक प्रभाव **अमृता कुमारी एवं आलोक कुमार पाण्डेय**	98-102
▸	प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दंड के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, विनोद कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	103-106
▸	माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के स्तर का अध्ययन **गजानंद सैन एवं डॉ0 मोहनलाल मेघवाल**	107-109
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन **महेश चंद जाटव, अमन कुमार एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	110-112
▸	आधुनिक भारत में प्रचलित पश्चिमी उपनिवेशवादी 'कास्ट' की संकल्पना का अवलोकन और समीक्षा **डॉ0 ओंकार चतुर्वेदी**	113-116
▸	उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	117-120
▸	करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री छैल बिहारी शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	121-125
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्रीमती मुकेशी मीना, श्री नितेंद्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	126-128
▸	स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन **श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	129-132
▸	सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन **विनोद कुमार शर्मा, मो0 आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	133-136
▸	स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव **मोहम्मद रफी एवं डॉ0 माहेजबी**	137-139
▸	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 विवेक मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	140-142
▸	The state of Women's Education in India impacting their Work Participation Rates with Special Reference to the Handloom Industry of Pilkhuwa **Anamika Pandey**	143-152
▸	Exploring the Theoretical Foundations of Animal-Assisted Therapy in Alleviating Loneliness among the Geriatric Population **Devyani Awasthi**	153-157

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 11, No. 1, January, 2024

Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन

श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन

सारांश

"मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है"।

मनुष्य एक सुसभ्य संस्कृति संपन्न व्यक्ति तथा चिर–स्मरणीय विभूति बनना चाहता है। इसलिए वह प्राणी जगत के सामान्य व्यवहार से परे रहकर शिक्षा को मध्यम और ज्ञान अर्जन का साधन ग्रहण करता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का सतत प्रयास करता है।

स्वामी विवेकानन्द शिक्षा के द्वारा मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवनी के लिए तैयार करना चाहते थे। इनका विश्वास था कि जब तक हम भौतिक दृष्टि से संपन्न नहीं होंगे तब तक ज्ञान, कर्म, भक्ति, योग यह सब कल्पना की वस्तु है। स्वामी जी ने व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया। स्वामी जी के अनुसार– तुमको कार्य के प्रत्येक क्षेत्र को व्यावहारिक बनाना पड़ेगा। स्वामी जी भारतीय दर्शन के पंडित और अद्वैत वेदांत के पोषक थे। स्वामी जी शिक्षा के विषय में कहते हैं कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो एवं शिक्षा की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। स्वामी जी शारीरिक विकास, बौद्धिक विकास, नैतिक विकास, समाज सेवा की भावना, धार्मिक व आध्यात्मिक विकास, व्यावसायिक विकास, आत्मविश्वास व आत्म त्याग की भावना, व राष्ट्रीयता के विकास पर विशेष बल दिया। स्वामी जी ने पाठ्यक्रम को दो भागों में बांटा– 1. आध्यात्मिक पूर्णता के लिए, 2. लौकिक समृद्धि के लिए। विवेकानंद जी ने कला को मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग माना है। शिक्षण विधि में उन्होंने एकाग्रता विधि पर विशेष बल दिया एवं छात्र संकल्पना, शिक्षक संकल्पना, तथा अनुशासन को अपने व्यवहार में आत्मा द्वारा निर्दिष्ट माना है।

शोध समस्या की पृष्ठभूमि–

प्रस्तावना

आज की शिक्षा ने हमें अक्षरों का ज्ञाता तो बना दिया किंतु मनुष्यता से दूर कर दिया। यही कारण है कि संपूर्ण विश्व में मानवीय गुणों की तलाश जारी है। हमें अपनी चेतना को सकारात्मक दिशा में गति देकर इन सभी विषयों पर गहराई से गौर करके सही व सटीक रास्ते का चयन करना होगा।

मनुष्य एक सुसभ्य संस्कृति संपन्न व्यक्ति तथा चिर स्मरणीय विभूति बनना चाहता है। इसलिए वह प्राणी जगत के सामान्य व्यवहार से परे रहकर शिक्षा को मध्यम और ज्ञानार्जन का साधन ग्रहण करता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का सतत प्रयास करता रहता है। 21वीं शताब्दी के भारत के लिए शिक्षा का पुनर्निर्माण तीव्र गति से करना होगा, यद्यपि स्वतंत्रता के पश्चात भारत में शिक्षा का प्रसार बड़ी तेजी से हुआ है। परिणामस्वरुप पूर्व प्राथमिक स्तर से लेकर विश्व विद्यालय स्तर तक शिक्षा संस्थानों में भारी वृद्धि हुई है। किंतु इसे हम गुणवत्ता की कसौटी पर यहाँ के जनमानस की अपेक्षाओं के अनुरूप संतोषजनक नहीं कर सके है। शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति उद्देश्य हीनता का भाव और शिक्षोपरान्त दिशाहीनता का भाव न केवल विद्यार्थियों के लिए अपितु संपूर्ण देश के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। विद्यार्थी उद्देश्य विहीन और दिग्भ्रमित शिक्षा प्राप्त कर विदेशी संस्कृति के मूल्यों का अंधानुकरण करते दिखाई पड़ते हैं। वे भारत की समृद्ध और मूल्यवान सांस्कृतिक विरासत को या तो समझ नहीं आए हैं या हमारी शिक्षा प्रणाली उन्हें मूल्यवान सांस्कृतिक विरासत में विद्यमान तत्वों से परिचित करने में असमर्थ रही है। स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन का अध्ययन करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं खुशी की अनुभूति हो रही है, साथ ही उनके शैक्षिक विचारों से वर्तमान शिक्षा का जगत को नई दिशा एवं प्रेरणा मिलेगी तथा आने वाली भावी पीढ़ी को काफी लाभ होगा। मैं इसी मेरा सौभाग्य मानता हूँ।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार– ''मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।''

शोध समस्या की प्रासंगिकता एवं औचित्य

भारतीय मनिषियों के प्रश्न आखिरकार दर्शन के प्रश्न होते हैं यह कथन इस परिपेक्ष्य में एकदम सत्य है। हमें शैक्षिक समस्याओं के समाधान का भारतीय संस्कृति तथा दर्शन के आधार पर हल खोजना हैं तो हमें राष्ट्र के उन चिंतकों की विचारधारा को आधार बनाकर योजना बनानी होगी, जिन्होंने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक संघर्षों का सामना करते हुए राष्ट्रहित में अपना जीवन ही समर्पित किया।

वर्तमान समय और प्रसंग के अनुरूप भारतीय शिक्षा शास्त्रियों के आदर्श, विचारों, नीतियों तथा सिद्धांतों का महत्व पर्याप्त बढ़ गया है। अतः हमें शिक्षा मनिषियों के विचारों, नीतियों तथा सिद्धांतों को जानना एवं उन पर मनन करना चाहिए। उनके जो विचार नीति सिद्धांत हैं उन्हें अपनी परिस्थिति के अनुसार जांचे, उनको अपनाऐ और अंपना मार्ग प्रशस्त करें।

ऐसे विचारक जिन्होंने आध्यात्म व अपने व्यवहार में सामंजस स्थापित करने का प्रयास किया। इसके हेतु स्वामी विवेकानंद से अधिक उपयुक्त अन्य कोई भी महापुरुष शिक्षा जगत में नहीं हो सकते हैं। अतः में शोध प्रबंध की प्रासंगिकता और औचित्य स्वामी विवेकानंद के विचारों की चिंतन शैली की करने से निकलने वाले तथ्यों को भी ज्ञात करना पडेगा अतः उन तथ्यों का पता लगाकर विवेचन प्रस्तुत करना शोधकर्ता का कर्तव्य है।

शोध समस्या कथन–

"स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन का अध्ययन।"

शोध के उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध समस्या स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में एक अध्ययन राष्ट्रीय जीवन को एक नई दिशा देने में रामबाण औषधि साबित हो सकती है। इन विचारको का जीवन और चिंतन शैली राष्ट्रीयता से ओतप्रोत थी, जिनकी आधुनिक परिपेक्ष्य में आवश्यकता नितांत आवश्यक जान पड़ती है।

इस परिकल्पना को लेकर शोधार्थी ने संबंधित शोध के निम्नांकित उद्देश्य तय किए हैं–

1. स्वामी विवेकानंद के जीवन के आध्यात्मिक व दार्शनिक पक्ष का अध्ययन करना।
2. विवेकानंद के शिक्षा चिंतन की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता के अध्ययन करना।

शोध समस्या अध्ययन का प्रारूप

शोध अध्ययन के प्रारूप में निम्न बिंदुओं को समाहित किया गया है।

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबन्धित विचार–

स्वामी विवेकानंद भारतीय दर्शन के पंडित और अद्वैत वेदांत के पोषक थे। ये वेदांत को व्यावहारिक रूप देने के लिए प्रसिद्ध है। इनके दार्शनिक विचार सैद्धांतिक रूप में इनके द्वारा विरचित पुस्तकों में पढ़े जा सकते हैं और उनका व्यावहारिक रूप रामकृष्ण मिशन के जन कल्याणकारी कार्यों में देखा जा सकता है।

स्वामी विवेकानंद द्वारा शिक्षा का संप्रत्यय–

स्वामी विवेकानंद शिक्षा के द्वारा मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवनो के लिए तैयार करना चाहते थे। इनका विश्वास था कि हम भौतिक दृष्टि से संपन्न नहीं होते तब तक ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग, ये सब कल्पना की वस्तु है। स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के सैद्धांतिक पक्ष का खंडन करते हुए व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया। इस संबंध में उन्होंने भारतीयों को समय–समय पर सचेत करते हुए कहा– तुम को कार्य के प्रत्येक क्षेत्र को व्यावहारिक बनाना पड़ेगा। संपूर्ण देश का सिद्धांतों के ढेरो ने विनाश कर दिया है।

"You will have to be practical in all spheres of work- The whole country has been ruined by mass theories" - Swami Vivekananda.

शिक्षा के उद्देश्य–

स्वामी जी मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों रूपों को वास्तविक मानते थे इसलिए मनुष्य के दोनों पक्षों पर बल देते थे। विवेकानंद जी ने शिक्षा के निम्न उद्देश्य पर बल दिया जो निम्नलिखित है–

शारीरिक विकास, बौद्धिक विकास, नैतिक एवं चारित्रिक विकास, समाज सेवा की भावना का विकास, धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकास, व्यावसायिक विकास, आत्मविश्वास व आत्म त्याग की भावना का उद्देश्य, राष्ट्रीयता का विकास आदि।

स्वामी जी के अनुसार गुरु–शिष्य संबंध–

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने की प्रथम शर्त यह है कि विद्यार्थी के हृदय में शिक्षक के प्रति श्रद्धा का भाव हो। उन्होंने कहा कि "शिक्षक के प्रति श्रद्धा, विनम्रता, समर्पण तथा सम्मान की भावना के बिना हमारे जीवन में कोई विकास नहीं हो सकता" स्वामी जी का दृढ़ विश्वास था, कि चरित्रवान गुरु के आदर्श जीवन के अनुकरण द्वारा ही बालक का अंतः सुप्त देवत्व जाग्रत किया जा सकता है वे लिखते हैं– "यदि देश के बच्चों को शिक्षा का भार फिर से त्यागी और निःस्पृह व्यक्तियों के कंधों पर नहीं आता, तो भारत को दूसरों की पदुकाओं को सदा के लिए अपने सिर पैर धोते रहना होगा।

पाठ्यक्रम–

स्वामी जी ने अपने द्वारा निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु एक विस्तृत पाठ्यक्रम का विधान प्रस्तुत किया है। स्वामी जी के अनुसार जीवन का चरम लक्ष्य आध्यात्मिक विकास के साथ लौकिक समृद्धि भी था।

1. **आध्यात्मिक पूर्णता के लिएः** स्वामी जी ने आध्यात्मिक पूर्णता के लिए धर्म, दर्शन, पुराण, उपनिषद, साधु संगत, उपदेश का समावेश किया।
2. **लौकिक समृद्धि के लिएः** भाषा, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान, कला, व्यावसायिक विषय, कृषि, खेलकूद, व्यायाम, आदि विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया।

शिक्षण विधि–

स्वामी जी को तत्कालीन शिक्षण विधि में कोई आस्था नहीं थी। उनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति का केवल एक ही मार्ग है और वह है **"एकाग्रता"।**

मन की एकाग्रता द्वारा ही शिक्षण हो सकता है, किसी अन्य विधि द्वारा नहीं।

छात्र–संकल्पना–

स्वामी जी ने शिष्य में शुद्धता, विचार, वाणी और कर्म की पवित्रता को आवश्यक गुण बताया हैं। विद्यार्थी में ज्ञान की पिपासा होनी चाहिए, जिज्ञासु ही वास्तविक शिष्य है। स्वामी जी ने बालको को स्वयं विकसित होने का सुझाव देते हुए कहा– "अपने अंदर जाओ और उपनिषदों को अपने में से बाहर निकालो। तुम सबसे महान पुस्तक हो, जो कभी भी अथवा होगी। जब तक अंतरात्मा नहीं खुलती, समस्त बाह्य शिक्षण व्यर्थ है।"

शिक्षक संकल्पना–

स्वामी जी के अनुसार शिक्षक के व्यक्तिगत का जीवन के बिना शिक्षा नहीं हो सकती है। शिक्षक का चरित्र अग्नि के समान प्रकाशमान हो, उच्चतम आदर्शो की सजीव मूर्ति हो, उसे ज्ञान के दान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। स्वामी जी लिखते हैं– "शिक्षक एक दार्शनिक, मित्र तथा पथ–प्रदर्शक है, जो बालक को अपने ढंग से अग्रसर होने के लिए सहायता प्रदान करता है।"

अनुशासन–

स्वामी विवेकानंद के अनुसार अनुशासन का अर्थ है अपने व्यवहार में आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना। स्वामी जी मनसा– वाचा– कर्मणा आत्मानुशासन के ही प्रबल समर्थक थे।

स्वामी जी के दार्शनिक विचार–

स्वामी जी का नवयुवकों को संदेश देते हुए कहा कि तुम्हें ध्येयवादी युवक होने होना चाहिए। मनुष्य को केवल मनुष्यों की आवश्यकता है और सब कुछ हो जायेगा किंतु आवश्यकता है– तेजस्वी, पूर्ण प्रमाणिक नवयुवकों की। मेरी आशाएँ इस नवोदय पीढ़ी में– आधुनिक पीढ़ी में केंद्रित है। उसी में से मेरे कार्यकर्ता निर्माण होंगे। "आओ हम अपने विवादों एवं आपसी कलह को समाप्त कर स्नेह की इस भव्यधारा को सर्वत्र प्रभावित कर दें।"

शिक्षा में स्वतंत्रता–

स्वामी जी शिक्षा में स्वतंत्रता के हिमायती थे उनके अनुसार स्वतंत्रता विकास की पहली शर्त हैं। अतः किसी भी शिक्षक को शिक्षार्थी पर किसी प्रकार की जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए समकालीन शिक्षा दार्शनिकों के समान वे भी मानव सेवा को ईश्वर साक्षात्कार का सबसे अच्छा साधन मानते हैं।

चरित निर्माण हेतु शिक्षा–

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य निर्माण करना है। अतः मनुष्य निर्माण करने का अर्थ चरित्र निर्माण करना है। विवेकानंद जी के शब्दों में "किसी भी व्यक्ति का चरित्र केवल उसकी प्रवृत्तियों का

समग्र उसके मानस के झुकाव का समग्र है, जैसे–जैसे सुख और दुख उसकी आत्मा के सामने आते हैं, बे उसे पर विभिन्न चित्र छोड़ जाते हैं" और इन संयुक्त संस्कारों के परिणाम को ही मनुष्य का चरित्र कहा जाता है।

धार्मिक शिक्षा–

भारतीय शिक्षा शास्त्रियों ने प्राचीन काल से ही शिक्षा में धार्मिक और आध्यात्मिक तत्व पर जोर दिया है। स्वामी जी के अनुसार धर्म शिक्षा का अंतिम आधार है। स्वामी जी ऐसे धर्म की शिक्षा के समर्थक थे जो मनुष्य को सहिष्णुता और विश्व बंधुत्व की शिक्षा दें।

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव–

स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन के शोध निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं।

1. स्वामी जी विवेकानंद का मानना है कि शिक्षा को जीवन पृथक नहीं किया जा सकता है इसलिए शिक्षा, मनुष्य एवं प्रकृति के अनुरूप होनी चाहिए।
2. शिक्षा के द्वारा बालको की सृजनात्मक प्रवृति एवं आध्यात्मिक भावना का विकास होता है जो व्यक्ति और समाज की दृष्टि से हितकर है।
3. पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विचारों में आदर्श परंपराओं को भी स्थान दिया जाना चाहिए।
4. शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य शिक्षार्थी को पूर्व मानव के रूप में विकसित करना।
5. शोध अध्ययन में पाया कि स्वामी विवेकानंद के धार्मिक शिक्षा से संबन्धि विचारों में धर्म को सांप्रदायिकता से पृथक होना चाहिए।

सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य के संबंध में इससे जुड़े हुए कई अन्य प्रकार के शोध कार्य और हो सकते हैं। भावी शोध हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं:–

1. भारत के प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों के शैक्षिक उपागम का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध किया जा सकता है।
2. महर्षि अरविंद घोष, महात्मा गांधी, विवेकानंद एवं रविंद्र नाथ टैगोर के अनुसार प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन पर भावी शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. अग्रवाल, एस.के., "शिक्षा के तात्विक सिद्धांत", राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 1981
2. चतुर्वेदी, बद्रीनाथ, "स्वामी विवेकानंद द लिविग वेदान्ता", पेंग्विन, 2006
3. स्वामी गम्भीरानंद, "युगनायक विवेकानंद", प्रथम खण्ड, रामकृष्णमठ, नागपुर, 2001
4. स्वामी गम्भीरानंद, "युगनायक विवेकानंद", द्वितीय खण्ड, रामकृष्णमठ, नागपुर, 2002